

Art Integrated Education @ SBPS

❖ Creating happy class rooms and making learning experiential.

Considering theatre to be the best medium of conveying one's thought, an interactive storytelling session was conducted by Mrs. Kavita Gupta in the premises of Sarala Birla Public School. The resource person is a famous storyteller and a theatre artist. The session started with a brief introduction about stories 'Not so old'. All the students participated enthusiastically in the role play of a 'Bear Hunt' Story. Stories on friendship, adventure, The Merchant of Seri from Jataka tales and real life based stories were enacted and narrated. Students were made aware of the correct use of words, tone of voice, gestures, facial expressions for effective communication while narrating a story. The students enjoyed the session wherein resource person's theatrical moves enchanted them and they could not resist jumping, dancing and composing their own stories.

School Head Personnel & Admin Mr. Pradip Varma said that such workshops help the children to develop creative thinking.

Principal Mrs. Paramjit Kaur said that theatre makes learning experiential and interesting. So, we keep on organising such sessions in our school which also improves the speaking and listening skills of the students.

सरला बिरला पब्लिक स्कूल में आर्ट इंटीग्रेटेड एजुकेशन

❖ शिक्षण को प्रायोगिक और कक्षा को खुशहाल बनाने की ओर अग्रसर

थिएटर अपने विचारों को दूसरों तक पहुँचाने का सबसे बेहतर माध्यम है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए सरला बिरला पब्लिक स्कूल में छात्रों के लिए श्रीमती कविता गुप्ता द्वारा स्टोरी टेलिंग सत्र का आयोजन किया गया। कार्यशाला का संचालन करने वाली मुख्य विशेषज्ञा श्रीमती कविता गुप्ता एक प्रख्यात कहानी वक्ता एवं थिएटर आर्टिस्ट हैं। 'नॉट सो ओल्ड' कहानियों द्वारा सत्र की शुरुआत की गई। बच्चों ने बड़े ही उत्साहपूर्वक 'बीयर हंट' स्टोरी के पात्रों का अभिनय पूर्ण ढंग से संवाद किया। जातक कथाओं में से 'द मर्चेंट ऑफ सेरी' जो कि जीवनानुभव कहानियों पर आधारित होती है, उसे भी अभिनयपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया। बच्चे कहानी कला के सभी गुणों से अवगत हुए। उन्होंने कहानी सुनाने के लहजे, शब्दों पर पकड़, चेहरे का भाव, आवाज़ का संतुलन एवं प्रभावात्मक संवाद के गुण सीखे। विशेषज्ञा द्वारा थियेटर से संबंधित कलाओं को सीखने के बाद बच्चे काफी उत्साहित दिखे। वे कहानियाँ गढ़ने, नाचने एवं उसपर अभिनय करने से अपने आप को रोक न सके।

विद्यालय के कार्मिक एवं प्रशासनिक प्रमुख श्री प्रदीप वर्मा ने कहा कि इस तरह की कार्यशाला छात्रों में वैचारिक कौशलता को प्रगाढ़ बनाने में मदद करती है।

विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती परमजीत कौर ने कहा कि थिएटर, शिक्षा को प्रायोगिक एवं दिलचस्प बनाती है। उन्होंने कहा विद्यालय में इस प्रकार के सत्रों का आयोजन छात्रों में वाक् एवं श्रव्य कौशल को विकसित करते हैं जिससे कि वे अपने मनोभावों को प्रभावकारी ढंग से प्रस्तुत कर सकें।



